Quit Indian Movement
भारत छोड़ो आंदोलन

Ashish Kumar Thakur
B.A II, History(H), Paper-II
RN.L.K.M.D. College Tajpur
Samastipur

क्रिप्स मिशन की असफलता से भारतीयों को निराशा हुई। अभी तक कांग्रेस ने कोई निर्णय नहीं लिया था, जिससे अंग्रेजों को परेशानी हो। परन्तु अब स्थिति थी, जबकि जापानी आक्रमण देश के द्वार पर खड़ा था, कांग्रेस चुप नहीं रह सकती थी। गांधीजी ने अब अप्रैल 1942 से ही अंग्रेजों को खुलेआम देश को भारत से चले जाने की बात कही। उनके अनुसार जो भी हो अब भारतीयों और अंग्रेजों की "कुशलता इसी में थी कि अंग्रेज भारत को छोड़ चले जाएं। अब 'भारत छोड़ो' का नारा प्रसिद्ध हो गया। 10 May 1942 के 'हरिजन' में उन्होंने लिखा कि " भारत में अंग्रेजों की उपस्थिति जापानियों को भारत पर आक्रमण करने का निमन्त्रण है। उनके जाने से यह लोभ समाप्त हो जाएगा।" इसी प्रकार कुछ दिन पश्चात उन्होंने उसी पत्र में लिखा था कि - 'भारत को ईश्वर के हाथों में अथवा अराजकता में छोड़ दो।" सब दल कुत्तों की भांति लड़ेंगे और जब वास्तविक उत्तरदायित्व उनके सिर पर पड़ेगा तो स्वयं वास्तविक समझौता कर लेंगे।

इसी प्रकार 14 जुलाई 1942 को कांग्रेस कार्यकारिणी ने अंग्रेजों को चले जाने का प्रस्ताव पारित किया और स्पष्ट कहा कि " यदि यह अपील स्वीकृत नहीं होती तो हम लोग महात्मा गांधी के नेतृत्व में देश में एक सविनय अवज्ञा आंदोलन चलाने के लिए बाध्य हो जाएंगे।

8 Aug 1942 को बम्बई में हुए अखिल भारतीय कांग्रेस कमिटि की बैठक में इस प्रस्ताव का समर्थन हुआ और यह कहा गया कि " भारत में अंग्रेजी राज्य की समाप्ति भारत और संयुक्त राष्ट्रों, दोनों के हित में है। इस राज्य का बने रहना भारत के लिए अपमानजनक है और इसे दिन प्रतिदिन क्षीण कर रहा है और इसे अपनी रक्षा के असमर्थ बनाता जा रहा है और संसार की स्वतंत्रता में भी योगदान देने में बाधा है।

Ashish

फलस्वरूप अगले दिन ही गांधीजी और कांग्रेस कार्यकारिणी के सभी सदस्य बन्दी बना लिए गए और अखिल भारतीय कांग्रेस कमिटि तथा प्रांतीय कांग्रेस कमेटियों पर प्रतिबंध लगा दिया गया। परन्तु लोगों ने इसको चुपचाप स्वीकार नहीं किया। स्थान-स्थान पर सार्वजनिक माल, सम्पत्ति इत्यादि की हानि हुई। गोलियां चली। यद्यपि कांग्रेस के नेताओं ने इसके लिए कोई उत्तरदायी स्वीकार नहीं किया परन्तु यह मानना कठिन है कि वे पूर्णतया अनभिज्ञ थे अथवा उनकी अनुमति के बिना यह सब कुछ हुआ। सरकार ने भी दमन चक्र चलाया, सैकड़ो व्यक्ति मारे गए और हजारों जेल में डाले गए।

कांग्रेस नेता इस प्रकार जेलों में बंद थे तो दूसरी ओर जिन्नाह ने मुस्लिम लीग को 23 मार्च 1943 ई० को पाकिस्तान दिवस मनाने का आह्वान किया। उन्होंने भारत के मुसलमानों को यह कहा कि पाकिस्तान ही मुसलमानों का राष्ट्रीय उद्देश्य है। मुस्लिम लीग ने भी 21 अप्रैल 1943 को इसका समर्थन किया।

1945 की वेवल योजना [The wavell plan] :-

Oct 1943 में लार्ड लिनलिथगो के स्थान पर लार्ड वेवेल भारत के गवर्नर जनरल नियुक्त हुए। उन्होंने गतिरोध को समाप्त करने का एक और प्रयत्न किया। मार्च 1945 में वह इंग्लैण्ड विचार विमर्श के लिए गए।

14 जून को उन्होंने अपने विचार-विमर्श के परिणामों से जनता को एक रेडियो प्रसारण द्वारा अवगत कराया। भारत राज्य सचिव लार्ड एमरी ने कामन्स सभा में भी इसी प्रकार का वक्तव्य दिया और यह कहा कि मार्च 1942 का प्रस्ताव पूर्ण रूपेण फिर भी उपस्थित था।

उसने जब तक नया संविधान न बने वाइसराय की कार्यकारिणी के पुनर्गठन का प्रस्ताव किया। गवर्नर जनरल और मुख्य सेनापति के अतिरिक्त सभी सदस्य भारतीय राजनैतिक नेताओं में (से लिए जायेंगे), इस परिषद में मुसलमान और सवर्ण हिन्दू बराबर बराबर ही होंगे।

कांग्रेस कार्यकारिणी के सदस्य जेल से छोड़ दिए जायेंगे और ज्योंही शिमला सम्मेलन के लिए निमन्त्रण दिए गए।

Ashish

Scanned with CamScanner

सम्मेलन 25 जून, 1945 को आरम्भ हुआ और तीन दिन की बातचीत के पश्चात स्थगित कर दिया गया। 11 जुलाई को जिन्नाह वेवेल से मिला और इस बात पर जोर दिया कि मुस्लिम लीग को ही समस्त मुसलमानों का प्रतिनिधि माना जाए। इसको वेवेल ने स्वीकार नहीं किया। तीन दिन के पश्चात शिमला सम्मेलन को असफल कहकर वेवेल ने समाप्त कर दिया।

इस असफलता के लिए वेवेल और जिन्नाह व्यक्तिगत रूप से उत्तरदायी थे। जैसा कि जिन्नाह ने समाचार पत्र सम्मेलन में कहा- "यह वेवेल योजना हमारे लिए एक फंदा था.... इससे हमलोग मारे जाते... प्रस्तावित कार्यकारिणी में हमारी संख्या 1/3 रह जाती क्योंकि अन्य अल्पसंख्यक वर्ग अनुसूचित जातियों, सिक्ख और ईसाई के प्रतिनिधि होने थे और सबसे महत्वपूर्ण बात यह थी कि पंजाब से और मलिक खिज़र हयात खाँ (जो संघवादी दल के थे) और मुस्लिम लीगी नहीं थे वेवेल उन्हें रखने पर जोर करते थे।

कांग्रेस के अध्यक्ष मौलाना अबुल कलाम आजाद ने इस असफलता का उत्तरदायित्व पूर्णतया जिन्नाह पर डाला।

भारत छोड़ो आंदोलन, जिसे अगस्त क्रांति भी कहा जाता है, भारतीय जनता की वीरता और लड़ाकूपन की अद्वितीय मिसाल है। उसका दमन भी उतना ही पाशविक और अभूतपूर्व था। जिन परिस्थितियों में संघर्ष छेड़ा गया, वैसी प्रतिकूल स्थिति भी राष्ट्र आंदोलन में अब तक नहीं आई थी। सवाल उठता है कि जब स्थितियाँ इतनी विकट थी और कठोर दमन लगभग निश्चित था तब भी इतना बड़ा संघर्ष छेड़ना जरूरी क्यों हो गया?

पहली बात तो यह है कि मार्च 1942 में क्रिप्स मिशन की विफलता से स्पष्ट हो गया था कि ब्रिटिश सरकार युद्ध में भारत की अनिच्छुक साझेदारी को तो बरकरार रखना चाहती थी, लेकिन किसी सम्मानजनक समझौता के लिए तैयार नहीं है। नेहरू और गांधी जैसे लोग भी थे, जो एक फासिस्ट-विरोधी युद्ध को किसी भी तरह कमजोर करना नहीं चाहते थे। वह निष्कर्ष पर पहुँच गए थे कि कि और अधिक चुप रहना यह स्वीकार कर लेना है कि ब्रिटिश सरकार को भारतीय

Ashish

Scanned with CamScanner

भारतीय जनता की इच्छा जाने बिना भारत का भविष्य तय करने का अधिकार है। "करो या मरो" वाले अपने भाषण में भी गांधीजी ने स्पष्ट-स्पष्ट कहा था कि - "मैं इंग्लैंड या चीन की हार का औज़ार बनना नहीं चाहता।" लेकिन 1942 के बसंत तक उन्हें लगने लगा था कि संघर्ष अपरिहार्य है। क्रिप्स की वापसी के एक पखवाड़े के बाद ही उन्होंने कांग्रेस कार्य समिति के लिए एक प्रस्ताव तैयार किया, जिसमें ब्रिटेन को भारत छोड़ने के लिए कहा गया था।

बंगाल और उड़ीसा की नावों को जापानियों द्वारा उनके संभावित इस्तेमाल को रोकने के लिए सरकार द्वारा नष्ट कर दिया गया था। सिंचाई की नहरों का कहीं जापानी जल परिवहन के लिए इस्तेमाल ना कर लें, यह सोचकर नहरों का पानी बहा दिया गया, जिससे खेत सूखने लगा था। मकानों और मोटर गाड़ियों पर भी सेना ने कब्जा कर लिया था। जनता खुशी-खुशी युद्ध में शामिल होते तो उसे यह सब नहीं अखरता, लेकिन यहाँ तो सब युद्ध उस पर लादा जा रहा था यहाँ तक की ब्रिटेन की हार की भी कारण।

गांधीजी का भाषण का बिजली जैसा असर हुआ। सबसे पहले तो उन्होंने स्पष्ट किया कि "असली संघर्ष इसी क्षण से शुरू हो रहा है। अब मैं वाइसराय से मिलूँगा और उनसे कहूँगा कि वे कांग्रेस का प्रस्ताव स्वीकार कर लें लेकिन मैं मंत्रीमण्डलों वगैरह वाइसराय से कोई समझौता नहीं किया करूँगा। सम्पूर्ण आजादी से कम किसी भी चीज से मैं संतुष्ट होने वाला नहीं। हो सकता है वे नमक टैक्स, शराबखोरी आदि खत्म करने का प्रस्ताव दें। लेकिन मेरे शब्द होंगे "आजादी से कम कुछ भी नहीं।" इसके बाद ही उन्होंने "करो या मरो" का नारा दिया

"करो या मरो" या तो हम भारत को आजाद करायेंगे या इस कोशिश में अपनी जान दे देंगे। अपनी गुलामी का स्थायित्व देखने के लिए हम जिंदा नहीं रहेंगे।

Ashish

Scanned with CamScanner